

सोऽस्मिन्महासाधयेनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वा.क

श्रीगरोराय नमः ॥ प्रसादप्रतिरमा विष्णु त्रेलोक्याधीपति प्रभु ॥
नातासास्त्रं च तं वध्वराज नितिसमुच्चयं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ त्रैलोक्य का
धिपति विष्णु करानमस्कारगरी नातासास्त्रं देविदिक्या कोराज
नितिसादिश्या प्रहापुत्रक राशि साउना नितिसिद्ध सासा करिषिकह
दाभया ॥ अर्थ ॥ त्रैलोक्यास्त्रं नरो ज्ञास्यति तत्त्वतः ॥ अर्थ ॥ देवा विनयं
कार्यं कार्य शुभाशुभं ॥ २ ॥ अर्थ ॥ मनुष्यलेयो सास्त्रपद्या पद्धि यो धर्म

१

२।५

यो धर्मप्रतिपादकः ॥ अर्थ ॥ कनकनिर्ज्वलदेसदिन्या हुन्व ज्ञानि हुन्व ॥ तदहं संप्रव
क्षामि नरादि तं कथयामि ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ मनुष्यप्रवर्धने साते वहिता कारिणि ॥ ४ ॥ अर्थ ॥ मनु
ष्यहृत्का उपकारकानि मिते कहन्व तयो सास्त्रपद्धि सास्त्रानि हुन्व महता रिकामि
उपदेसदिन्य ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ मनुष्यसुखं प्रवक्ष्यामि न कथेन तु भाषितं ॥ ६ ॥ अर्थ ॥ मनुष्यज्ञानं सात्रे सास
वजा बहिनायते ॥ ७ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानकर्म बिले भया को कर्म मनुष्यले यो सास्त्रपु
द्गि सात्रज्यवरमेव सत्ते भुत विषयवर्तमान भोंदक ततैव वद्या मनुष्यपति ॥ ८ ॥
गरिजादह ॥ ९ ॥ अर्थ ॥ सिद्धयोपदेसेन दुष्टा रिप्रभसो नय ॥ १० ॥ अर्थ ॥ संप्रयोगे साप

२

२।५

बा.क

२

सिद्ध तो प्य व सिद्धि ॥५॥ अर्थ मूर्ख सिद्ध कन उपदेस दिया को रुकुचरित्र भया कि
स्यासिक न गहना दिया को मधि सत्र भया का सित विश्वास गला को ययी जो
नि मनुष्य पति ना सिद्ध ॥ गुनि भी सह संवर्क पंडितै सह संकथा ॥ कुलि भी स
ह मित्र वें कुंधी सो ना वा सिद्धि ॥६॥ अर्थ ॥ गुनि मनुष्य सित संग न गर्नु ना नि मनुष्य
सित कुरा गर्न कुल वंत संग मित्रारि ला ॥ दुष्ट सा मनुष्य ला इष्ट ख कै सु पदै न
॥७॥ अत्ता ना भुजंग ना मधु वानो वंदति ना ॥ श्री नां गराज कुला नां च विश्वास ति गता
दुष्ट ॥८॥ अर्थ बहला हा संग सर्व संग आलि संग मनुवाला संग विश्वास गला

रा.म
२

मनुष्य को भावु चाड़े हो टिंङ्क ॥ वैरि ना सह विश्वास न रां कर नु मि छ नि ॥ सवृक्षा मेष्ट स
सु प्रप्रति त प्रति वृध्यतः ॥९॥ अर्थ ॥ अथि शत्रु भया का सित विश्वास गला मनुष्य रूख का
हा ग मा सुत न्या मनुष्य रे कै हो रूख वा टव स्या व हि को था ज वा कला ॥ धन धां प प्रयो
जेष्टु विश्वास संग होष्टु च ॥ आहार मवहारेष्टु त्ये कल लब्धः सता भवेत् ॥१०॥ अर्थ ॥ धन संग
ह गदी गला विश्वास पदी माहा आहार व्यवहा मा ल लब्धः ॥ न गुरु स दृष्टि मा तान
गुरु स दृष्टि पिता ॥ यत्तारे महा घोर संसारो दधि दत्तरं ॥११॥ अर्थ ॥ अमा वा हि पति गुरु
मेष्ट वा वृद्धा हि पति गुरु मेष्ट कया हा म न्या मा मा वा वृत्ता जन्म मा गै दिवं गुरु ले ना संसार

समुद्र ता ईहें ॥ आता जंगा समोति र्थ आता पुर मेव ॥ गुरु के प्रार स मोति र्थ आता जंगा
 पुन पुनः ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ जंगा नि र्थ रूमा वरोवरु नः पुर कर ति र्थ वा वा वरोवरु नः के न
 र ति र्थ र गुरु वरोवरु नः अभा भव्या जंगा तु ल्य हु नः विज्ञापु स्यं कुरु पातां क्षमा पु पं त य श्री तां ॥ को
 कि ला वी खर पु पं वा रि स्यं प ति वृ ता ॥ १२ ॥ अर्थ ॥ पु पं वृ न्दा को रुप वि स हो त सि को रुप क्ष मा धा रि
 भै र ह नः को ई श्री को रुप खर हो खा सि को रुप प ति वृ ता भै र ह नः ॥ न च वि द्या स मो वं धु र न
 च व्या धी स मो रि पुः ॥ न च प त्प स म ह्न हो न च ई वा प रं व लं ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ वि द्या ज ति को
 भा ई श्रा पू वा न्यु भा इ प वि हो इ न न रो ज ज ति को रा रुप नि अ को ई न हो रो ज ति को स

२।५

रुप नि स त ह पैन कै ॥ व ज ति को व ति यो प ति न्यु र को हि छै इ न वि द्या प्र वा सि मि त्रं
 भा र्या त्रिं गे हे षु वं ॥ आ त र स्यो व ध मि त्रं ध र्म मि त्रं प र त्रं च ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ प र त्रं को मि त्र वि
 द्या हो च र कि मि त्र स्वा क्षि हो रो ज को मि त्र त्रौ व दि हो प र लो क को मि त्र ध र्म हो ॥ इ रा त्रि तां वि षं
 वि द्या त्र नि र्ता भो र रा वि षं ॥ वि षं गे ष्टि रि त्र स्य वृ द्ध से त रु नि वि षं ॥ १५ ॥ अर्थ ॥ अ भा स
 हा डि दि द्या व दि वि द्या प नि वि षु न्द अ प च न य्या व दि षा या को अ न्य प नि वि षु न्दः के न नि म
 या प दि न न्यु भा इ वि षु न्द नः वृ ठा ला इ प नी त रु नि स्वा क्षि प नी वि षु न्दो अ न्य ध्या स्य

पा.क

हृत्तु विद्याविद्यहास्येह तारित्रमः॥ कुविद्येराह तं शत्रं भूत्वा देवैरु तावत् ॥१६॥
सुखं॥ अथ सखि। यावद्विद्याकोनासुहृत् परपुषादेविता नैक रागसौ लाज्या
पवित्राक्षिनासिंदे नत्रिको विविजपुण्यापदिषे तकोनासुहृत् मंत्रितनी को
भो वदिराजानासिंदे॥ १७॥ यस्य पुत्रो न विद्यां सो न सुतेन वयं नृतिः॥ अथ कालं वृत्तं
स्मान्ना वद्रे वसवर्त्ति॥ १८॥ अर्थ॥ नको होरा जातिपति सुतापति मयनर सुतापति मयन
ततस्को कलम्रध्यारोहो म्रध्यारोहो कारातजसो॥ रावशिदिपकं सुहृत् प्रभाते विदिपकं
त्रैलोक्ये दिपको धर्मसुपुत्रो कलादिपकः॥ १९॥ अर्थ॥ रात्रिको अभा उच्यते माले हृत्

राम

दिनको सोभा उच्यते माले हृत् त्रैलोक्ये दिपको सोभा उच्यते धर्मले हृत् सुपुत्रले कलको सो
भा हृत्॥ ॥ जने ता चोपने ता चयसुर्विद्या प्रयोक्षति॥ अथ राता भयत्राल पंचैते पिलर
रम्यता॥ १९॥ अर्थ॥ प्रपुषा ईजन्मदिव्या नावः ससुतापुत्र प्रतिपाल गन्धी गुरु संका सुमा
रक्षा गन्धी एति पात्र वावु हृत्॥ गुरुपत्नी राजापत्नी मित्रपत्नी तथैव च॥ पतिमाता स्वमा
ता च पंचैते मातरम्यता॥ २०॥ अर्थ॥ गुरुमित्र मित्रमाता माता सुमायेति पात्रमा
हृत्॥ ललायत्पंचवर्षा सिट् सवर्षा सिता हृत्॥ संप्राप्ते कोट सेवर्षे पुत्रमित्रं वदते

॥२१॥ अर्थ ॥ होरा हरु लाई पाच वर्ष सम्प्रबेलन दिनु ५ सवर्ष देवि शो हर वर्ष सम्प्रबेलन
 (उत्तराशिका) उदासावन्पाणी नागर्द ५ सवर्ष देवि पुछो मित्र मै मात्रु लालना दहवो
 दोषा मा दना दहवो गुरा ॥ तथा पुत्र च सिष्य जता दयन तद्गालयत ॥२२॥ अर्थ ॥ होरा
 लाई रसिष्य लाई स्रष्टा पु संसंग बेलन दिया वडो वै ग न छ तस्का ररा होरा लाई रसिष्य लाई
 ता दुरा ग पा ग न पर्क ॥ रुचिर भ्रासयोः सप्ततां प्रज्ञाया विप्रयो जनं ॥२३॥ अर्थ ॥ नर नृप का
 रुचि प निष्ठ भ्रास प निष्ठ त प्रज्ञा को कया प्रयो जन न छ न स्म रुचि भ्रास सै न त प्रज्ञा को

क्या प्रयो जन न छ ॥ पुत्रास्तु विविधैः शास्त्रैर्निर्गो व्या सततं बुधैः ॥ तृती रात्रि संपन्नाः
 भवन्ति खलु पु जिताः ॥२४॥ अर्थ ॥ ता विम नृप ले होरा कन शास्त्र पहा उन ला उन
 शास्त्र जान्या पदि बुझि व नृप ले सर्वे लोक ले माया गर्द न ॥ पठ पुत्र कि मान त्या मप
 देश खाह क ॥ पठंति पु अप ते लोका पठ पुत्र दिने दिने ॥२५॥ अर्थ ॥ वात क नृ
 वि मित्रा प्रा होरा कन भन्क न हे पुत्र प ह प ह्या देखि लोक राजा ले सर्वे ले पु
 जा माया गर्द न न प ह्या देखि ता भा रिवो क नृ ह लो जो त नृ प र्क ॥ गुरो बुक्ति य

तां यत्न किं जातो वै प्रसोजनं ॥ कै ते किं गन्धमाद्यायसयंगकं तिष्ठतपनः ॥
 ॥२६॥ अर्थ ॥ भला मनुष्यले गुनसिकरु अलक्षितरु दुगुणार्तहत्या मनुष्ये ले
 गह ताभावापद्विदुधोहै नमर्थी नव्याता भव्या वृद्धि गइला इंच नुभा इति
 यापति मोल मील देन ॥ नरस्य भरसां रूपं रूपस्य भरसां गुणं ॥ गुणस्य भर
 सां जासां जासास्य भरसां क्षमा ॥ २७ ॥ अर्थ ॥ मनुष्य को गह ता भव्या रूप
 होः रूप को गहता भव्या गुहो गुण को गहता जात हो जासा को गहता

क्षमा हो ॥ गुणं पद सि मारूपं सिलं वृद्ध सि मा कुलं ॥ सिद्धि वृद्ध सि मा वि
 द्या भो गं वृद्ध सि मा धनं ॥ २८ ॥ अर्थ रूप वृद्ध क्वा भनिके हि सो देन नर गुण वृ
 द्वा भनि सवै सो दृष्ट न कुल हो क्वा भनिके हि सो देन नर गो भावि निके
 द्वा भनि सवै सो दृष्ट विद्या पत्या को द्वा भनिके हि सो देन नर सिद्धि वृद्ध भनि
 सो दृष्ट न ॥ अगुण स्य हतं रूपं प्रसिल स्य हतं कुलं ॥ प्रसिद्धि स्य हता वि
 द्या प्रसो धनं धनं ॥ २९ ॥ अर्थ ॥ गुण गुह्या को रूप व्या थी हो सिल नर

त्याको कुव्यायाहा सिद्धि न भयापदि विद्यापस्याको व्ययी हो जित न स
 कु त्याको धनपनि व्ययी हो ॥ गुरां मुखं मते रूपं विलं भुवं द्युने कुलं ॥ सिद्धिं
 रूपं मते विद्या भोगं मुखाय ते धनं ॥ ३० ॥ अर्थ ॥ रूप के गहता गत हो धन को ग
 गहता शून्य भो गहो ॥ सुकुले यो ज कं त्या पुत्रं विद्या स यो जयत् ॥ वसने को ज स
 त्रुं मित्रं धर्मं यो जयत् ॥ ३१ ॥ अर्थ ॥ वस कुल कि कल्या विवाह गर्न हो राहाई सातै देखि ७
 सास्र मोला उरु धर्म मा मित्र लाई लाउनु ॥ ता त्पुत्र सिव से मेरु जाति नि मुनोर सा तला ॥

व्यवसाय सहायं तां नालि वारं महोदधे ॥ ३२ ॥ अर्थ ॥ उपाय लेता त्पुत्र रूप वत
 वनि स्रोत के नः पाला पति हो हो नः समुद्र पारु न सि किं हः न रक्षार सा ना नि उ
 धम न हा इनु ॥ सो के न बड धे न पा दे नै को क्षर रा वा मठ धं दिव संकु र्वा पत ध्या
 य न कर्म सु ॥ ३३ ॥ अर्थ ॥ अविद्धि न ग रि एक सिलो क म्मा धा सिलो क प धै रह दुः स
 अविद्धि भ ग रि प त्या पदि विद्या पारु न्द ॥ यो जनानां नो सहस्रा सिव नो त्या ति
 विधी लिका ॥ सरा हू न ते जो विपद मे वं न ग ह न ॥ ३४ ॥ अर्थ ॥ अभ्या स न हा डि हि धा क मि

लोपनिहृत्कारजो नन जानुछु ॥ लच्छिगत्यापछि गरु टलेव निपती कले जान सके नर ॥
 सनैरकी सने विद्या सने पर्वत मारहा ॥ सनै धर्म सका बुज्या या मर्थ सने सने ॥ ३५ ॥
 अर्थ ॥ धन नृपा उदासा विद्या पर्वत मारहा पर्वत चढाहा धर्म गरु को हि उद्या गरु
 विस्तारः गरिका म पुष्प चाडो गमाले हुदै न ॥ गुरु सुख वया विद्या पुष्प लेन धने
 नवा ॥ मथना विद्या या विद्या चतुर्थ तो पल भये ॥ ३६ ॥ अर्थ ॥ विद्या पर्वत मारहा
 वार प्रकार ले विद्या वा ईच्छु क्या क्या भया कि गुरु को सेवा ले कि धन ले कि विद्या

विद्या साठिकन वा ईच्छु ॥ एभर प्रफा तारं यो गुरु नाभी मंथते ॥ सानयो निसातं
 गथा चाडालो बो विजायते ॥ ३७ ॥ अर्थ ॥ एकै गुरु सक्षर पद्या उज्या कन पति जो
 गुरु मान्येन सदा जो निरुकर भै कन चन्दाल जन्म ॥ पुस्तकं त्ययो धीना तं गुरु
 रसं व्रीधौ ॥ तशो भै तसमा मर्थ जार गभ ई विस्त्रीया ॥ ३८ ॥ अर्थ ॥ गुरु हें उन
 पहि पुस्तक माहे रि पुर्या मनु कुन शो भाहें उन कसो भया जार काग मं जलो ॥ सि
 विशील मनाल मस्य पण्डित्यं मित्र मग्रहं ॥ अत्रौ रह रशि विद्या प वेते स्रष्टं वो निधि ॥ ३९ ॥

यां क

८

अथ ॥ सिवा- सिवा इन्द्रा नालस्य सात्त्विकं निरुत्पन्ना ॥ नृयेति यो कनसुचो
रले चोरिले जानस्यै नम्रधो धनसो ॥ नहि जन्म तिजन्म त्वंगुसा मुचन ते ॥
गुसा गुसातरं या तिपयोऽविद्य तं यथा ॥ ४० ॥ अथ ॥ जन्मको जेठो जेठान
भन्म गुसा ले जेठो जेठो हो क्या हो भन्पा दुदुद हि माद्यु रे धिं कुले रा विशाले
रा गुसा वात्पु जितो नर ॥ धनु वंश विमृधो पिते गुसा किंकारि व्यति ॥ ४१ ॥ अ
थ ॥ गुं न जा सातु ह्या मरुध लाई वंश कुल मा जन्म भयापति व्यथो जन्म ध

राज

नृवंश राजा का कुल मा जन्म भयापति निर्गुण के हि प्रयो जन्म न ॥ किं कुलं रा
विशाले रा विद्या हि न सुधा नर ॥ अकुलि नो विविदा रा देवता ईव पुं यते
॥ ४२ ॥ अथ ॥ कुल वत मात्र भया ले क्या प्रयो जन्म व विद्या न मात्रा पदि
विद्या भयापक मा कुलि भयाप विदेवता रे गरि मां कृत् ॥ नवा सी भजते नावमा
वत्पारं न गच्छति ॥ ४३ ॥ तिरोत्तु गते पारे ना वकिं प्रयो जन्म ॥ ४४ ॥ अथ ॥ विद्या
समुद्र को ना वर कै हो समुद्र नत रे ज्यार ना वचा हि ह समुद्र नत साप
दि नाव को क्या प्रयो जन्म ॥ गुसाः सर्वत्र पुं जन्म पितृ वंसा मिथ्यक ॥

वासुदेवं नमस्यंति वसुदेवं नमते जना ॥ ४४ ॥ अर्थ ॥ समस्त ठा ॥ माहा गुरा
 को पुजा गई नः वा वु होरा भव्या ह दैन क्या हा भव्या श्री कृष्ण को सबे पु
 जा माया गई नः वसुदेव को तको हि पुजा गई न ॥ गुरा कुर्वंति दुराचं दुरे
 विवसतां नं शां ॥ केत कि गंधमाद्या व्यस्यं गं हंति षटपठा ॥ ४५ ॥ अर्थ
 गुरा मनुस्पटा ठा वश्या पति धन मभ्यहरुर्वा हि पुग्गु कत कि कुल को वास
 ना पाई कत भवरा लक मा पुग्गु ॥ विशाचं च न पत्नं च न हि तु प्यपरा क्र ॥

स्वदे से पुजितो राजा विद्या सर्वत्र पूज्यते ॥ ४६ ॥ अर्थ ॥ राजार विद्या पद्मावरो
 वरु ह दैन क्या हा भव्या राजाला ई त मा पूा दे समा माना ग छ विद्या पद्मा के न वारें पु
 मा माया गई नः तस्कार न विद्या ब्रुलो ॥ ऐके ना पि सुत्रे रा वि श्या म के रा साधु नां ॥ कुलं
 पुरु वंद्रे रो प्रकास्यते ॥ ४७ ॥ अर्थ ॥ सुपुत्र विद्या वत्त साधु से सा पुरुष सिंघो र ले वं
 प्रमाले प्रकास्य ग या ई कुल को प्रकास गई नः ॥ विद्याया भजन कश्चि कश्चि प्रवा
 स्य भजनं ॥ ७ भयो भजनं कश्चि कश्चि भयो भजनं ॥ ४८ ॥ अर्थ ॥ को हि मनुष्य विद्या को
 भाइ ह न को हि मनुष्य भन का भाइ ह नः को हि मनुष्य के पुत्रै यो कं ह नः को हि मनुष्य के

हुवे को कहे न ॥ नमति कलिना वधानमतिगुशिरोजना ॥ प्रदुष्कापुं व मुखि वशि
 ज्ञातेन नमन्यते ॥ ४७ ॥ अर्थ ॥ कुलपुत्र्या को सुखदुःख संजन न पति नमत
 दुःख सुखा को कोठ मरुष वरुभाखने नमत हुदे न ॥ नहिक मीशिक त्वारि संध्या का
 ले नियो नयत ॥ आहार भेयु नु निजा तदा साध्या के वन ॥ ५० ॥ अर्थ ॥ एति चार
 थोक संध्या काल माहा वगर्द के न आहार स्थि सभोग नि प्रपाठा गदु एति थो
 क गर्द के न ॥ आहार नाम ते व्याधि गभीरु रक्ष जायते ॥ प्रलक्ष्मी क श्रव्या वा सया
 व सयुष भव ॥ ५१ ॥ अर्थ ॥ संध्या काल माहा वायसे गिहु न्ह सि सभोग मा कु वज ॥

मन्त्र निद्रा गत्या धना स दुःख पाठा गत्य प्रायु छ दह ॥ वेद वेदांग तत्व जो ज पडे मव
 रायरा ॥ आसि र्विद परो मित्य स परा ज पुरो हित ॥ ५२ ॥ अर्थ ॥ वेद वेदांग तत्व जाव्या आसि
 र्विद परो हित ॥ वाधु परित्या गिस म दुःख सुख भूमि ॥ ५३ ॥ अर्थ ॥ जानि मल सानु काम ग
 न्या प्राप रग मा माहा त्या ग गनी सुख दुःख वरो वर मा पाये सा कन राजा दुःखा ॥ ५४ ॥ कुल
 सिल गुरो यत सत्य धर्म विराम रा ॥ प्रविशा वे सलो प्रक्षरा नाध्यक्षो विविचते ॥ ५५ ॥

॥ अर्थ ॥ कुलसिलगुणावतधर्मात्मासत्यधारितरविवक्षाराक्षमावतसर्वेसामर्थ
 लेयुक्तभवाकोरसाकनराजातुत्पादु ॥ कुरंयसनीतंलुधंमप्रगुलंसज्वं ॥ अनाय
 व्ययकर्तारंनाविपत्तंनियोजयत् ॥ ५४ ॥ अर्थ ॥ रिसालाजुवायालोमिश्रानिनाहाक
 माषर्चजर्षाससाकनराजातुत्पादु ॥ मूलवृत्तिहितोधिस्सर्वस्तुपरिधुक्त ॥
 राविद्वयवसापावभर्माधुप्रधोविधियते ॥ ५५ ॥ अर्थ ॥ केहिकाजभापापनिनिदान
 गरिजर्षाधिर्यवत्सर्वेस्तुकोपक्षान्मावयवसायिकचिह्नसाकनविचारितुत्पादु
 ॥ आयुर्कृताभासःसर्वनप्रीयद्वान ॥ अर्थसिलगुणोपेतस्यवैद्योविधियते ॥ ५६ ॥

॥ अर्थ ॥ कैलनानवैरागजान्मानारिकोपरिभाजान्मासवैसितमिलन्मासिलवत्ससाक
 नवैद्योत्पादु ॥ पितृपितृहोदक्षःसास्रजोमिरुपावक ॥ सुनिश्चाकटिनश्चैवशुपका
 रप्रसप्ततै ॥ ५८ ॥ अर्थ ॥ वाकुवराज्युदेखिविचजरासारत्रजान्माससाकनभान्मात्पा
 ॥ सकाद्रुक्तगृहितथोलद्युहरतो जिगधारः ॥ सर्वसास्रसमालोकिर्यथाशेषक
 ॥ ५९ ॥ अर्थ ॥ एकवेरसुनिमास्रार्थकृन्नाचाशेलेषप्यारमरास्रक्षरसवैशा
 त्रिजान्माससाकननरदार्त्तुत्पादु ॥ ॥ इतिनाकारतत्त्वोक्तावधौवद्वानः ॥ अत्रमास
 राध्यशोप्रतिहारःसञ्चयते ॥ ६० ॥ अर्थ कामकोस्ररसारजान्मावलियोसर्वेसित
 मित

१३
चा.क.

न्याविचक्षणास्तु कान्तद्वरिप्ररतुल्या ७८ ॥ समस्त कृतसास्त्र जो पठित अजिताश्व
यः ॥ धैर्य सौंदर्यगुणोपेतः श्रेयसाध्य शो विधियते ॥ ६१ ॥ अर्थ ॥ तत्त्विकर्तृ समस्त सास्त्रज्ञ
न्याविचक्षणापरिभ्रमनभयकोधीर्षवंत सुखंत सत्सा कान्तक जितुल्या ७८ ॥ समस्त रूप
सास्त्र जो वहनेषु पराजित ॥ श्रेयस्य गुणोपेतः प्रज्ञाध्य शो विधियते ॥ ६२ ॥ अर्थ ॥ सर्वे शोरा
कोपरि श्राजान्याद्योद्योको नानहारजां न्यासु रणरावन् सत्सा कान्तसुवारितुल्या
७८ ॥ मेधाविवाक्य दुःप्राज्ञः पक्ष विज्ञोपरः धकाः ॥ धीरो यथोक्त वादिचरण इतो
विधियते ॥ ६३ ॥ अर्थ ॥ वोलिवे सुकुराजा न्या नानिप्रकी कोमर्त बोधगम्योधि १३

राम

॥ कृपणाद्विसंभ्रंत रमा अकृतनासवं ॥ १४ ॥ अर्थ ॥ प्रति उग्रराजा
कनपनीकादिदि कनकाद्यानास होला ॥ वाग्मा भार्य सुतो मुखप्रेष
कोवाग्र विचारकः ॥ निरुने हो वंधुवर्गश्च तपने हस्य महसुखं ॥ १५ ॥ अर्थ
॥ प्रीतिहित भया कि दुस्त्रि सुखी रो प्रहाया को काजन गत्या सिव कुर
तिकनकोदिदिया पक्षि सुख हूँ ॥ न कस्यचित्कस्यचि क्षीत्रं न कश्चि
त्कस्यचित् ॥ करना दे न जायंते मित्रा शिरिवन सथा ॥ १६ ॥ अर्थ ॥ कसे
को को हि मित्र है न कसे को को हि विद्यारो है न कार्यकारण मास रूप

तिरुत्तं मित्रप तिरुत्तं ॥ कार्या कारणा माश क्रुप तिरुत्तं मित्रप तिरु
 त्रुत्तं ॥ कार्या र्थि भजते लोको न लोको परमा र्थतः ॥ वत्सक्षि
 रक्ष यं दुःखा परित्यजेति मानसं ॥ ११ अर्थ ॥ भाषा कार्य
 का निमित्तं सर्वे प्रेमं हृत्तं धर्म का निमित्तं त्यक्तो हि प्रेम हृत्तं न-
 को स भव्या दुःखा क्य पक्षी गच्छा इ वाष्ठा लोको हृत्तं ॥ कुतो व्य
 सति नो निन्दः अत्युत्तं कुतो रतिः ॥ कुत सौ स्त्वद रि दुस्तं
 गर्जनस्य कुतः क्षमाः ॥ १८ ॥ अर्थ ॥ कुवासा द्वि न त्या कव नि